विचार बिन्दु

जो आदमी नशे में मदहोश हो उसकी सूरत उसकी माँ को भी बुरी लगती है।
–तिरुवल्लुवर

अच्छे शासन की आस में ही मतदाता सरकारें बदलता है

विधानसभा चुनावों में राज्य के मतदाताओं ने अशोक गहलोत सरकार को स्पष्ट तौर पर नकार कर सबको चौकाया ही नहीं, बहुतों को बेचैन भी किया है। कांटे की टक्कर के सारे कयासों को ध्वस्त करते हुए राजस्थान की जनता ने अपनी स्पष्ट राय व्यक्त की है कि वह उस नेतृत्व को फिर से स्वीकार नहीं करती जिसने अपने पांच वर्ष के कार्यकाल का अधिकांश समय सिर्फ अपनी कुर्सी बचाये रखने का जुगाड करते हुए बिताया। चुनाव के परिणाम सौ साल से अधिक पुरानी कांग्रेस पार्टी की पराजय की ही कहानी नहीं कह रहे हैं। ये परिणाम एक ऐसे राजनेता के दु:खद कीर्तिमान को भी बयान कर रहे हैं जिसने सत्ता में रहते हुए तीसरी बार अपनी पार्टी को मतदाताओं की निगाह में गिराते हुए चुनाव में हरवाने का सेहरा अपने सिर बांधा। कहते हैं 'दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है।' लेकिन गहलोत अपनी सरकार की पराजय का दो बार स्वाद चखने के बाद तीसरी बार भी न अपनी प्रशासनिक कमजोरियों को समझ पाये और न नई ऊर्जावान पीढी के लिए जगह छोडने के लिए तैयार हुए। स्वाभाविक ही राजनैतिक पर्यवेक्षकों की दिलचस्पी यह जानने में होगी कि यह तीसरी पराजय गहलोत के राजनीतिक वैभव को कितना क्षीण करती है? सबने देखा है कि मारवाड़ के गांधी से मिस्टर चीफ मिनिस्टर तक की उनकी यात्रा उस राजनेता का सफर है जो कभी 'अशोकजी' होते थे मगर फिर 'सीएम साहब' हो गये, जो तीसरी बार के बाद और अगली बार की चाह लिए हुए अकेले झूंझते दिखा। राजनीति में किसी का नैतिक उत्थान और पतन कैसे होता है उसका अशोक गहलोत अनुपम उदाहरण है। उनके सत्ता में आने के बाद कभी यह नहीं लगा कि मिस्टर चीफ मिनिस्टर गहलोत को किसी भी मुद्दे पर कभी कोई नैतिक समस्या रही हो। इसका नतीजा उनकी प्रशासनिक अक्षमता के रूप में बार-बार सामने आया। राज का रुतबा होता है। कहते हैं कि यह राम का रुतबा था कि उनकी खड़ाऊ ने राज किया। गहलोत सरकार के पांच सालों में कभी उनके राज का रुतबा नहीं नज़र आया और लोगों के मन में यह धारणा बन गई कि इस सरकार में बस लूट-खसोट है। ऐसी हालत में लोक कल्याणकारी राज संभव ही नहीं हुआ करता। गहलोत के समर्थक राजनेता तथा नौकरशाह बेलगाम होते चले गये। ऐसी परिस्थितियां ही लोगों के मन में चुनाव के दौरान सत्ता विरोधी भावनाएं जगाती हैं और विपरीत परिणाम देती हैं। पिछले पांच सालों में प्रशासन के हर कोने में, यहां तक कि शिक्षा व्यवस्था में भी, भ्रष्टाचार पसर कर नीचे वहां तक पहुंच गया जहां वह आम आदमी विशेषकर युवा वर्ग को टीस देने वाला साबित हुआ उसकी पीड़ा तथा पीड़ित लोगों की हाय भारी पड़ी। राजकोष को आंख मूंद कर खर्च करते हुए लोगों को भौतिक राहतें देने के बावजूद गहलोत का जादू नहीं चला। चुनाव की आचार संहिता लागू होने के साथ जब प्रचार के बल पर सर्वत्र नज़र आ रहा मुख्यमंत्री का चेहरा मीडिया से लोप हुआ तो पता चला कि मतदाताओं का गहलोत की गारंटी पर भरोसा नहीं था। एक ऐसे राजनेता जिसके बारे में कभी यह माना जाता हो कि वह इतना सरल है कि आम आदमी से सहज ही जुड़ता है का ऐसा हाल हुआ कि वह अपने मरजीदानों से घिरा हुआ चालाक तथा राजनैतिक महत्वाकांक्षी नौकरशाहों के हाथों में खेलता चल गया। वह इस बार भी दीवार पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी इबारत नहीं पढ सका।

यह सवाल वाज़िब पूछा जा सकता है कि गहलोत राजनैतिक और सामाजिक मुद्दों को सचिवालय में प्रशासनिक स्तर पर क्यों निबटाने का प्रयास करते रहे और ऐसा करते हुए नौकरशाही का राजनीतिकरण ही नहीं करते रहे बल्कि बड़े नौकरशाहों की राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं भी बढ़ाते रहे। अपनी कुर्सी बचाने के लिए अपने साथ खड़े विधानसभा सदस्यों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ उनका गठबंधन उन्हें लोक से दूर ले जाता चल गया। ऐसा शायद इसलिए भी हुआ क्योंकि वे जटिल तथा अस्पष्ट मुद्दों को समझ पाने में कभी सक्षम नहीं रहे और समझदार मगर स्पष्टवादी हितकारियों को अपने पास नहीं फटकने दिया। उनका उद्देश्य सिर्फ सत्ता में आना और अपनी सत्ता बनाए रखना रहा है। सबने यह भी देखा कि अपनी सत्ता बचाए रखने के लिए वे नैतिक सिद्धांतों को तिलांजलि देने में एक क्षण नहीं गंवाते लगे। उनकी सौम्यता और सरलता का मुखौटा उनके राजनैतिक प्रभुत्व के अंतिम दौर में तड़क गया जो उनके अपनों के लिए यह सदमे से कम नहीं था। उनकी सत्ता के तीसरे कार्यकाल के अंतिम समय यही उजागर हुआ कि वर्तमान कुटिल राजनीति के दौर में वे सत्ता की मखमली सेज पर सोने में तो सफल रहे हैं परंतु लोक सेवा की गर्म रेत पर पांव रखने लायक नहीं रहे। सबको यह लगने लगा कि उनके सपने लोगों की सेवा के नहीं बल्कि सत्ता में अपना वर्चस्व बचाये रखने या अपने बेटे को राजनीति में स्थापित करने के हो गये हैं। उनका आचरण किसी ऐसे पुराने अहंकारी राजा या महाराजा की भांति हो चला जो अपना राज बचाने तथा अपना वर्चस्व बढाने के लिए सतत युद्धरत रहता है। अशोक गहलोत को नजदीक से जानने वाले कहते हैं कि वे बलवान होकर ऐसे नेता बन गये हैं जो सम्पूर्ण समर्पण से कम पर राजी नहीं होते और अपने से कमतर लोगों के बीच ही सहज होते हैं। गहलोत राजनीति में संजय गांधी के युग की उपज हैं। वे राजनीति में उतरी उस पीढ़ी के भी प्रतिनिधि हैं जिसका अध्ययन से और ज़मीनी स्तर पर काम करने से कभी कोई वास्ता नहीं रहा। विश्वविद्यालय छात्रसंघ की चुनावी राजनीति से संसदीय चुनावों की जोड़तोड़ की राजनीति से सीधे संसद में पहुंचने के बाद तो जमीन की तरफ देखना उन्हें कभी गंवारा नहीं रहा। केंद्र में छोटे मंत्री बन कर असफल रहने के बाद उन्होंने यह जरूर समझ लिया कि दिल्ली में टिकने की क्षमता और प्रशासनिक कुशलता के मामले में वे कोरे हैं। अपनी राजनैतिक गोटियों की चाल से बड़ों को परास्त कर राजस्थान में अपना चिरस्थाई स्थान बना लेने के दशकों बाद भी उनकी प्रशासनिक कुशलता की स्लेट कोरी ही मिलती है।

परिणामों की घोषणा के बाद उन्होंने कहा भी कि चुनाव परिणाम उन्हें चौकाने वाले आये हैं। वे अपनी सरकार की पिछली दो पराजयों से और अब तीसरी पराजय के बाद भी यह समझने में असफल हैं कि मतदाता नौकरशाहों के भरोसे सरकार चलाने की उनकी गवरर्नेंस की शैली को अस्वीकार करते हैं। इनमें पार्टी संगठन और मूक कार्यकर्ता भी शामिल हैं।

राजस्थान की राजनीति में अशोक गहलोत कभी दूसरे नंबर के नेता नहीं रहे। पुराने ज़माने के राजनेताओं ने पिछली सदी के सातवें दशक में उन्हें अपने मकसद से आगे किया था। गहलोत ने शुरू में ही यह सीख ले ली कि दूसरों के मकसद को अपना अवसर बना लो। गांधीवादियों के इस चहेते युवा नेता ने सत्ता के निकट पहुंचते ही छल कपट की राजनीति को साधने में कोई समय नहीं लगाया। अवसर की राजनीति के वे प्रत्यक्ष प्रमाण देते रहे हैं। इसीलिए उनके चारों ओर भी अवसरवादी लोगों की ही भीड़ लगी दिखती रही। गहलोत उन लोगों के बीच ही अपने को सुविधाजनक महसूस करते हैं जो उनकी ही तरह 'मीडियोकर' (औसत दर्जे के) हों। गहलोत को ऐसे भक्त चाहिए जो उनसे अधिक समझ नहीं रखते हों और जो सिर्फ और सिर्फ उनके अनुयायी बन कर रहना पसंद करते हों। वे अपना व्यक्तिगत विरोध रत्ती भर भी बर्दास्त नहीं करते और अपने विरोधी को चुपचाप कुचल देने का महारथ रखते हैं। वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव पर बीबीसी ने अपनी समीक्षा में कर्नल किरोड़ी सिंह बैन्सला, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, को उनके बारे में यह कहते हुए उद्धृत किया था कि गहलोत बेहद सजग नेता हैं। इतने सजग कि उन्हें कोई दूध पिलाने की कोशिश करे, तो वो उसका पहला घूंट किसी बिल्ली को पिलाए बिना खुद नहीं पियेंगे। राजनेता की छवि को लोगों में बड़ी दिखाने के लिए बहुत सी बातें प्रचार माध्यमों के जरिए बनाई जाती है। परंतु वह सब बातें आम जन के लिए होती है। लेकिन ऐसा भी हो जाता है कि कोई नेता प्रयास करके बनाई अपनी आभासी छवि पर खुद भी भरोसा करने लगता है और भूल जाये कि वह छवि आभासी है, सच नहीं है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। प्रचंड प्रचार से बनाई अपनी छवि पर खुद ही मोहित हुए रहे गहलोत को पता ही नहीं चला कि उनके पांव के नीचे से लोगों के भरोसे का आधार खिसक गया है। परिणामों की घोषणा के बाद उन्होंने कहा भी कि चुनाव परिणाम उन्हें चौकाने वाले आये हैं। वे अपनी सरकार की पिछली दो पराजयों से और अब तीसरी पराजय के बाद भी यह समझने में असफल हैं कि मतदाता नौकरशाहों के भरोसे सरकार चलाने की उनकी गवरर्नेंस की शैली को अस्वीकार करते हैं। इनमें पार्टी संगठन और मूक कार्यकर्ताओं भी शामिल हैं। उनकी शैली अपने लिए समर्थन खरीदने की रही। सरकारी राहतों की सुनामी लाकर उन्होंने मतदाता को खरीद लेने का दंभ भरी आस की जो पूरी तरह असफल रही। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि कांग्रेस की चुनावी पराजय का एक कारण समुदायों के बीच भाजपा का ध्रुवीकरण भी रहा। यह अचानक नहीं हुआ। सभी जानते थे कि चुनावों में बीजेपी का यह एक अहम् हथियार होगा। उससे वैचारिक स्तर पर निबटने का कौशल सोशल इंजीनियरिंग में विश्वास करने वाले गहलोत के पास नहीं था। वे कांग्रेस की जैसी हालत करके जा रहे हैं उससे पार्टी कैसे उबरेगी यह कोई नहीं जानता। नई सरकार से लोगों की यही अपेक्षा होगी कि उन्हें खैरात नहीं संवैधानिक हक़ मिले। हक़ का बंटवारा समानता के साथ न्यायपूर्वक हो। युवा वर्ग को मानवीय पूंजी के रूप में विकसित किया जाए और उनके भविष्य से नहीं खेला जाए।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ऑनलाइन कारोबार का प्रभाव

अविनाश जोशी

ऑनलाइन व्यवसाय आधुनिक युग का व्यवसाय या वाणिज्यिक लेनदेन का एक अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है। जिसमें इंटरनेट पर जानकारी साझा कर वस्तुओं का खरीद-बेचान होता है। यह माध्यम वाणिज्य व्यवसायों, समूहों और व्यक्तियों के बीच उत्पादों और सेवाओं के आदान-प्रदान का गठन करता है और इसे किसी भी व्यवसाय की आवश्यक गतिविधियों में से एक के रूप में देखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स व्यक्तियों, समूहों और अन्य व्यवसायों के साथ व्यवसाय की बाहरी गतिविधियों और संबंधों को सक्षम करने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग पर केंद्रित है, जबकि ई-व्यवसाय इंटरनेट की मदद से व्यवसाय को संदर्भित करता है।

देशभर में तेजी से पांव पसारते आनलाइन कारोबार को पहली बार उपभोक्ता कानून के दायरे में लाया गया है। किसी भी उपभोक्ता की शिकायत मिलने पर अब ई-कारोबारी कंपनी को अड़तालीस घंटे के भीतर उस शिकायत को स्वीकार करना होगा और एक महीने के भीतर उसका निस्तारण भी करना होगा।

उपभोक्ता संरक्षण कानून के नए प्रावधानों के मुताबिक अब जिला आयोग को पचास लाख, राज्य आयोग को पचास लाख से दो करोड़ और राष्ट्रीय आयोग को दो करोड़ रुपए से अधिक मूल्य वाले उत्पादों तथा सेवाओं से संबंधित शिकायतें सुनने का अधिकार होगा। दरअसल केंद्र का तर्क है कि पुराने नियमों के तहत शिकायतों की सुनवाई की ऊंची सीमा रखे जाने से जिला और राज्य स्तरीय उपभोक्ता आयोगों के पास मामले काफी बढ़ गए थे और ये बदलाव उपभोक्ताओं की शिकायतों के त्वरित निपटारे के लिए किए गए हैं।

वैसे तो बाजार में उपभोक्ताओं को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए कई कानून बनाए गए। लेकिन जब से उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 अस्तित्व में आया, तब से उपभोक्ताओं को शीघ्र, त्वरित व कम खर्च पर न्याय दिलाने का मार्ग तो प्रशस्त हुआ ही, साथ ही उपभोक्ताओं को किसी भी प्रकार की सेवाएं प्रदान करने वाली कंपनियां व प्रतिष्ठान भी अपनी सेवाओं और उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने के प्रति सचेत हुए। लेकिन इतना सब कुछ होने के बावजूद उपभोक्ता का शोषण होने का सिलसिला थमा नहीं। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 में उपभोक्ताओं को किसी भी प्रकार की ठगी और धोखाधड़ी से बचाने के लिए उपभोक्ता अधिकारों, अनुचित व्यापार प्रथाओं और भ्रामक विज्ञापनों से संबंधित मामलों में पूछताछ और जांच करने के लिए उपभोक्ता अदालतों के साथ-साथ एक सलाहकार निकाय के रूप में केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना की व्यवस्था की गई है। नए कानून में खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट करने वाली कंपनियों और भ्रामक विज्ञापनों पर निर्माता तथा विज्ञापन करने वाले पर जुर्माने और सख्त सजा जैसे प्रावधान भी जोड़े गए हैं।

इन प्रावधानों के मुताबिक कंपनी अपने जिस उत्पाद का प्रचार कर रही है, वह वास्तव में उसी गुणवत्ता वाला है या नहीं, इसकी जवाबदेही विज्ञापन करने वाले की भी होगी। भ्रमित करने वाले विज्ञापनों पर उपभोक्ता कानून में अधिकार दिया गया है कि वह जिम्मेदार व्यक्तियों को दो से पांच साल की सजा के साथ कंपनी पर दस लाख रुपए तक का जुर्माना लगा सके। यही नहीं, बड़े और ज्यादा गंभीर मामलों में जुर्माने की राशि पचास लाख रुपए तक भी संभव है। इसके अलावा कानून अनुरूप उपभोक्ता अधिकारों की जांच करने के अलावा वस्तु और सेवाओं को वापस लेने का अधिकार भी होगा।

ई-व्यापार नियमों के तहत ई-कारोबारियों के लिए उत्पाद का मूल्य, उसकी समाप्ति तिथि, उसे लौटाने, पैसे लौटाने, बदलने, वारंटी-गारंटी, वितरण, भुगतान के तरीके, शिकायत निवारण तंत्र, भुगतान के तरीकों के बारे में विवरण प्रदर्शित करना जैसे कदमों को अनिवार्य किया गया। नया उपभोक्ता कानून लागू होने के बाद ई-कारोबार कंपनियों के खिलाफ सामान की गुणवत्ता, पहुंचाने में देरी, सामान बदलने में देरी इत्यादि को लेकर शिकायतों का अंबार लगा है। उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय के अनुसार राष्ट्रीय उपभोक्ता हेल्पलाइन पर दर्ज प्रत्येक पांच में से एक शिकायत ई-कारोबारी कंपनियों के खिलाफ है।

कोरोना काल के बाद जरूरी सामानों की खरीद ऑनलाइन माध्यम से ज्यादा हो रही है। इससे ऑनलाइन व्यापार तेजी से मजबूत हो रहा है, तो इसी के साथ छोटे-मझोले दुकानदारों पर उनकी रोजी-रोटी छिनने का खतरा भी मंडराने लगा है। ऑनलाइन बाजार में अलग-अलग क्षेत्रों में 50 से 70 फीसदी प्रतिवर्ष तक की बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। इससे खुदरा और असंगठित क्षेत्र में करोड़ों लोगों की नौकरियों पर खतरा पैदा हो गया है। त्योहारी सीजन की शुरुआत के साथ ही ऑनलाइन कंपनियां नये नए उत्पादों की मांग पूरी करने की कोशिश कर रही हैं, तो खुदरा व्यापारी दुकानों में अभी भी ठाहकों का इंतजार कर रहा है। कोविड काल में ऑनलाइन व्यापार पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया था। केवल आवश्यक सेवाओं को ही अनुमति दी गई थी। लेकिन अनलॉक शुरू होने के साथ ही ऑनलाइन बाजार ने तेजी से अपने पांव जमाए हैं। ऑनलाइन बाजार किस तेजी के साथ अपने पैर जमा रहा है, इसका अंदाजा सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि इस समय न्यूनतम 30 लाख ऑनलाइन आर्डर प्रतिदिन किये जा रहे हैं। इनमें मोबाइल, कपड़े, मशीनें, चश्मे से लेकर रोजमर्रा के इस्तेमाल होने वाली दाल-सब्जी जैसी चीजें भी शामिल हैं।

स्मार्टफोन की बढ़ती पहुंच, 4जी नेटवर्क के लॉन्च और बढ़ती उपभोक्ता संपत्ति से प्रेरित होकर, भारतीय ई-कॉमर्स बाजार 2026 तक 200 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। भारत में ऑनलाइन खुदरा बिक्री बहुत तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। फ्लिपकार्ट, अमेज़न इंडिया पेटीएम मॉल और अन्य सैंकड़ों ऑनलाइन वेब साइट्स के नेतृत्व में भारत तेजी से विकसित होने की उम्मीद है। चीन और अमेरिका के बाद, भारत के पास तीसरा सबसे बड़ा ऑनलाइन शॉपर बेस है।

ई-कॉमर्स ने भारत में व्यापार करने के तरीके को बदल दिया है। भारतीय ई-कॉमर्स बाजार 2025 तक 115 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। 2030 तक इसके 350 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। उद्योग की अधिकांश वृद्धि इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुंच में वृद्धि के कारण हुई है। ई-कॉमर्स कई बहुपक्षीय वार्ताओं जैसे क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी, डब्ल्यूटीओ, ब्रिक्स आदि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। ई-कॉमर्स को अभी भी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, घरेलू व्यापार, प्रतिस्पर्धा नीति, उपभोक्ता संरक्षण, सूचना प्रौद्योगिकी आदि जैसे विभिन्न मुद्दों का सामना करना पड़ता है।

–अविनाश जोशी,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

नहर से मिट्टी नहीं निकालने से किसान पानी से वंचित

जैसलमेर, (निसं)। इन्दिरा गांधी नहर विभाग के अधिकारीयों और ठेकेदारों की भ्रष्टाचारी नीति के चलते नहरें बालू रेत से भरी पड़ी है मिट्टी निकालने का सरकारी बजट खपाने के पश्चात भी नहरों से मिट्टी नही निकल पाने की वजह से पानी किसानों को नहीं मिल रहा है।

■ **मिट्टी निकालने का सरकारी बजट खपाने के पश्चात भी नहरों से मिट्टी नहीं निकाली**

जैसलमेर के नहरी इलाके के किसानों ने मंगलवार को नहरी विभाग के बाहर प्रदर्शन किया। नहरी इलाके के किसानों की मांग है कि उनको उनकी बारी का नहर का पानी नहीं मिल रहा है जिससे उनकी रबी कि फसलों की बुआई प्रभावित हो रही है। किसानों ने नहर में मिट्टी होने की शिकायत करते हुए ठेकेदार पर आधा-अधूरा काम कर मिट्टी नहीं निकालने का आरोप लगाया। किसानों का कहना है कि ठेकेदार की ओर से नहर से मिट्टी नहीं निकालने से किसानों को पानी नहीं पहुंचा है। किसानों ने प्रदर्शन करते हुए नहर के अधिकारियों को ज्ञापन देकर जल्द से जल्द समस्या का समाधान करने की मांग की। किसान कमलसिंह का कहना है कि इंदिरा गांधी नहर के आसुतार वितरिका में नहर का पानी नहीं आ रहा है। पिछली दो बारी में पानी नहीं आने से उनकी रबी कि फसलों कि बुआई बहुत प्रभावित हो रही है। जिससे फसलें खराब हो रही है।

पश्चिमी विक्षोभ का असर कम होने से बादल छंटे

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान के अधिकांश भागों में अब पश्चिमी विक्षोभ का असर खत्म हो रहा है। इससे बारिश और बादल छाए रहने जैसी गतिविधियों में कमी आ गई है। जोधपुर शहर में भी आज बादल छंट गो और दोपहर में धूप निकल आई। इससे सर्दी का असर कम हो गया। हालांकि यहां सुबह-शाम सर्दी का असर दिखाई दे रहा है।

मौसम विशेषज्ञों के अनुसार अब करीब एक सप्ताह मौसम शुष्क रहेगा। उत्तरी हवाओं के प्रभाव से न्यूनतम तापमान में दो से तीन डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की जाएगी। पश्चिम विक्षोभ से प्रदेश में बने वेदर सिस्टम के गुजर जाने के बाद अब जोधपुर में सर्दी बढ़ने लगी है। अभी जोधपुर में सुबह व शाम के समय पारा तेजी से नीचे आने से लोगों को सर्दी का एहसास हो रहा है। वहीं दिन के समय पारा बढ़ने से लोग सर्दी से राहत महसूस कर रहे हैं। जोधपुर में मंगलवार को दोपहर अधिकतम 25 और न्यूनतम तापमान 12 डिग्री सेल्शियस दर्ज किया गया।

जोधपुर पोलो सीजन-24 की शुरुआत आज

जोधपुर, (कासं)। 24वें जोधपुर पोलो सीजन 2023 का शुभारंभ छह दिसम्बर से होगा। इसमें देश-विदेश के नामचीन खिलाड़ी भाग लेंगे। इस सीजन में 6 टूर्नामेंट व 9 एक दिवसीय मैच होंगे। जोधपुर के खिलाड़ियों सहित जयपुर के पूर्व राजपरिवार के सदस्य पद्मनाभ सिंह, पूर्व मंत्री अशोक चांदना व इंग्लैड व दक्षिण अफ्रिका के खिलाड़ी शिरकत करेंगे। खेल में विदेशी अम्पायर रोडनी जेफ्री गुट्रिज व निकोलस स्क्रोटिचीनी होंगे।

■ **देश-विदेश के नामचीन खिलाड़ी भाग लेंगे**

■ **इस सीजन में 6 टूर्नामेंट व 9 एक दिवसीय मैच होंगे**

24वां जोधपुर पोलो सीजन 2023 जोधपुर पोलो एवं इक्यूस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर की ओर से 6 दिसम्बर से 14 जनवरी 2024 तक महाराजा गज सिंह स्पोर्ट्स फाउंडेशन पोलो मैदान, एयरफोर्स रोड, पाबूपुरा पर आयोजित होगा। आयोजन पूर्व राजपरिवार के सदस्य गज सिंह के मुख्य संरक्षण में होगा।

जोधपुर पोलो एवं इक्वीस्टेरियन इंस्टीट्यूट, जोधपुर के मानद सचिव इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि पोलो सीजन-2023 में 6 टूर्नामेंट व 9 एक दिवसीय प्रदर्शन मैच खेले जाएंगे। 6 दिसंबर से 14 जनवरी तक होंगे मैच, 4 मुख्य टूर्नामेंट होंगे आयोजित। पोलो सीजन में चार टूर्नामेंट होंगे। इसमें बुधवार 6 से 9 दिसम्बर को उम्मेद भवन पैलेस कप 4 गोल, एच.एच. महाराजा ऑफ जोधपुर कप 8 गोल 14 से 18 दिसम्बर, राजपूताना व सेन्ट्रल इंडिया कप आठ गोल 19 से 24 दिसम्बर व 27 से 30 दिसम्बर के मध्य महाराजा ऑफ जोधपुर गोल्डन जुबली कप 8 गोल होगा। पोलो सीजन में दो क्लब टूर्नामेंट होंगे। इसमें गुरुवार चार से सात जनवरी 2024 को जोधपुर पोलो कप दो गोल व बुधवार 10 से 14 जनवरी को मेहरानगढ़ कप 4 गोल होगा।

इन्द्रजीत सिंह नाथावत ने बताया कि सीजन में 9 प्रदर्शन मैच खेले जाएंगे, इसमें मंगलवार 12 दिसम्बर को मेजर ठाकुर सरदारसिंहजी जसोल मेमोरियल कप, 13 दिसम्बर को महाराजा सरदार सिंह मेमोरियल कप, 16 दिसम्बर को मथुरादास माथुर मेमोरियल पोलो कप, 20 दिसम्बर को इंडियन एयर फोर्स लोंगेवाला पोलो कप, 22 दिसम्बर को आर्मी कमाण्डर्स कप, 24 दिसम्बर को हरमीस कप, 25 दिसम्बर को भंवर बाईजीलाल वारा राजे पोलो कप व आबूशेर कप, 29 दिसम्बर को हिज इाईनेस महाराजा हनंवत सिंह कप खेलें जाएंगे। ये सभी मैच दोपहर 3 बजे होंगे। मेयो कॉलेज के युवा खिलाड़ी शिवांश सिंह शक्तावत, हर्षवर्धन सिंह सोढ़ा, आर्यवर्धन सिंह चौहान, भूमिजय सिंह राठौड़ लेंगे हिस्सा। मेयो कॉलेज के युवा खिलाड़ी शिवांश सिंह शक्तावत, हर्षवर्धन सिंह सोढ़ा, आर्यवर्धन सिंह चौहान, भूमिजय सिंह राठौड़ हिस्सा लेंगे।

धांधेला गांव में दस दिन से पेयजल संकट

पाटन, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत धांधेला में गत दस दिनों से पानी का संकट चल रहा है। ग्रामीण महिलाओं को दूर-दराज से पानी लाना पड़ रहा है।

सरपंच प्रत्याशी अनोखी देवी ने जानकारी देते हुए बताया कि पानी की समस्या को लेकर जब हम पानी सप्लाई करने वाले कर्मचारी से मिले तो उन्होंने बताया कि सप्लाई कैसे हो सकेगी क्योंकि सही राम सैनी के मकान के पास पाइपलाइन क्षतिग्रस्त पड़ी हुई है। जिस कारण अधिकांश पानी वहीं निकल रहा है, इसके साथ ही कैलाश सैनी पुत्र पोकर मल सैनी के खेत में लगी बोरिंग की मोटर भी खराब होने से पानी की सप्लाई नहीं हो रही है। इस बारे में हमने कनिष्ठ अभियंता को अवगत करवा दिया है। मोटर और लाइन खराब होने के कारण पानी की सप्लाई नहीं हो पा रही है। ठेकेदार का आदमी लाइन को ठीक करने के लिए आया भी था परंतु लाइन दूसरी जगह से फिर टूट गई जिस कारण पानी की सप्लाई नहीं हो रही है।

■ **महिलाओं को दूर-दराज से लाना पड़ रहा है पानी**

हैडपंप पर पानी भरती महिलाएं।

अनोखी देवी ने बताया कि गांव में पानी की सप्लाई नहीं होने के कारण महिलाओं को दूर-दराज से पानी लाना पड़ रहा है। सरपंच प्रत्याशी अनोखी देवी ने जलदाय विभाग के अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा है कि या तो प्रशासन लाइन और मोटर को ठीक कर देता है अन्यथा मजबूर महिलाओं को जलदाय विभाग के खिलाफ धरना प्रदर्शन करना पड़ेगा, जिसकी समस्त जिम्मेदारी जलदाय विभाग के अधिकारियों की होगी। उन्होंने यह भी बताया कि सर्दी के मौसम में जब कर्मचारियों की यह हालत है तो आने वाली गर्मियों में क्या हाल होंगे। अनोखी देवी ने बताया कि विभागीय अधिकारियों की अनदेखी के चलते ही यह आलम हो रहा है, वहीं राजनीति के पदाधिकारी भी ग्रामीणों के साथ भेदभाव कर रहे हैं।

चूरू की मुख्य सड़कों पर गंदगी के ढेर लगे

चूरू, (कासं)। नगर परिषद की अनदेखी के कारण चूरू की मुख्य सड़कों पर गंदगी के ढेर लगे हुए हैं। इससे लोगों का राह चलना भी मुश्किल काम हो गया है। साथ ही चूरू शहर का सौंदर्य दागदार हो रहा है।

मिली जानकारी के अनुसार धर्मस्तूप से बाजार की ओर जाने वाली मुख्य सड़क पर नटराज होटल के सामने कचरा फैला हुआ है। माना कि नगरपरिषद वालों को खुद तो कचरा आदि दिखाई नहीं देता है, लेकिन अवगत करवा देने के बाद भी अपनी आंखें नहीं खोल रहे हैं। यहां आसपास के नागरिकों ने नियमित सफाई करवाने की मांग प्रशासन से की है। इसी प्रकार रेलवे स्टेशन के आगे भारी मात्रा में गंदगी देखी जा सकती है। यह नगरपरिषद और जिला प्रशासन की सतर्कता की पोल खोलने के लिए काफी है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 6 दिसम्बर, 2023

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र गुरूवार प्रात: 6:24 तक, प्रीति योग रात्रि 11:29 तक, तैतिल करण दिन 1:51 तक, चन्द्रमा आज 10:22 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृश्चिक, बुध-धनु, गुरू-मेष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज नेपच्यून मार्गी सांय 6:55 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:42 तक, शुभ 11:00 से 12:18 तक, चर 2:59 से 4:11 तक, लाभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:06, सूर्यास्त 5:29

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृष
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित उचित परामर्श मिलेगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।